# पाठ – 1 यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

## संक्षेप में लिखे

**Q1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें -**
**(क) ज्युसेपे मेत्सिनी**
**(ख) काउंट कैमिलो दे कावूर**
**(ग) यूनानी स्वतंत्रता युद्ध**
**(घ) फ़्रैंकफ़र्ट संसद**
**(ड) राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका**

**उत्तर-** (क) यह एक इटालियन क्रांतिकारी थे जिन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इटली को एकीकृत करने में। उनका मानना था कि एक देश इंसानियत का मूल हिस्सा है और इटली जो कि टुकड़ों टुकड़ों में बंटा हुआ है उसे एकीकृत होना ही चाहिए| उन्होंने एकात्मक इटली राज्य के लिए एक कार्यक्रम की स्थापना की , उन्होंने यंग इटली और यंग यूरोप नाम के दो गुप्त सोसायटी भी स्थापित की इस तरह से उन्होंने समाज में अपने विचारों को फैलाया और इटली गणराज्य की स्थापना के लिए अपना योगदान दिया |

(ख) इटली के सात राज्यों में से केवल सार्डिनिया-पीडमोंट पर एक इतालियन रियासत का शासन था। जब 1831 और 1848 के क्रांतिकारी विद्रोह इटली को एकजुट करने में विफल रहे, तो एक एकीकृत इटली की स्थापना की ज़िम्मेदारी इस इतालियन राज्य पर आ गई। राजा विक्टर इमैनुएल द्वितीय इसके शासक थे और कैवोर मुख्यमंत्री थे। कैवोर ने उन्नीसवीं शताब्दी के इटली के अलग-अलग राज्यों को एकजुट करने के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने फ्रांस के साथ एक सावधानीपूर्वक कूटनीतिक गठबंधन किया, जिसने 1859 में सार्डिनिया-पीडमॉन्ट को ऑस्ट्रियाई सेना को हराने में मदद की, और इस तरह से ऑस्ट्रियाई हैब्सबर्ग से इटली के उत्तरी भाग को मुक्त कर दिया।

(ग) यूनानी स्वतंत्रता युद्ध एक सफल युद्ध था जिसे यूनानी क्रांतिकारियों ने 1821 और 1829 के बीच ओटोमन अंपायर के खिलाफ लड़ा था | यूनानीओं को पश्चिम यूरोपीय देशों का समर्थन था, इसी के साथ साथ कवि और कलाकारों ने भी यूनानी क्रांतिकारिओं का साथ दिया| अंततः ट्रीटी ऑफ कांस्टेंटिनॉपल 1832 ने यूनान को एक स्वतंत्र देश घोषित किया |

(घ) यह एक जर्मन नेशनल असेंबली थी जो विभिन्न जर्मन क्षेत्रों से आए हुए मध्यम वर्ग के पेशेवरों, व्यापारियों और समृद्ध कारीगरों द्वारा बनाई गई थी। यह 18 मई, 1848 को फ्रैंकफर्ट शहर के सेंट पॉल चर्च में बुलाई गई थी। इस सभा ने जर्मन राष्ट्र के लिए एक संविधान का गठन किया, जिसका नेतृत्व संसद के अधीन राज-तंत्र से होता। हालांकि, इसे अभिजात वर्ग और सेना के विरोध का सामना करना पड़ा। इसके अलावा, क्योंकि यह मध्यम वर्गों के नियंत्रण में था, इसलिए इसने अपने जनाधार को खो दिया। अंत में, 31 मई, 1849 को इसे भंग करने के लिए मजबूर किया गया |

(ड़) फ्रांसीसी क्रांति के कलात्मक इतिहास को देखते हुए यह निश्चित होता है इस क्रांति में पुरुष व महिलाओं ने बराबर भाग लिया था | स्वतंत्रता एक महिला के रूप में व्यक्त की जाती है | यूरोप में राष्ट्रवादी

गतिविधियों में महिलाओं की पुरुषों के बराबर की भागीदारी थी इसके बावजूद उन्हें राजनीतिक अधिकार नहीं मिले , फ्रैंकफर्ट संसद में महिलाओं को आगंतुकों की गैलरी में खड़े होने के लिए केवल प्रेक्षकों के रूप में ही भर्ती किया गया था |

**Q2. फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान का भाव पैदा करने के लिए फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने क्या कदम उठाए ?**

**उत्तर-** फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान की भावना पैदा करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। ला पेट्री (पितृभूमि) और ले सिटोयेन (नागरिक) के विचारों ने एक संविधान के तहत समान अधिकारों का आनंद लेने वाले एकजुट समुदाय की धारणा को लोकप्रिय बनाया। एक नए फ्रांसीसी ध्वज ने शाही मानक को बदल दिया। एस्टेट्स जनरल का नाम बदलकर नेशनल असेंबली कर दिया गया और उसे सक्रिय नागरिकों के एक समूह द्वारा चुना गया। एक केंद्रीय प्रशासनिक प्रणाली ने पूरे राष्ट्र के लिए समान कानून बनाए और क्षेत्रीय बोलियों को राष्ट्रीय भाषा के रूप में फ्रांसीसी के पक्ष में हतोत्साहित किया गया।

**Q3. मारीआन और जर्मेनिया कौन थे ? जिस तरह उन्हें चित्रित किया गया उसका क्या महत्व था?**

**उत्तर-** मैरिएन और जर्मेनिया फ्रांसीसी और जर्मन राष्ट्र के लिए संबंधित महिला छवि थे। वे स्वतंत्रता और गणतंत्र जैसे आदर्शों के व्यक्तित्व के रूप में खड़े थे। जिस तरह से उन्हें चित्रित किया गया था, उसका महत्व इस तथ्य में था कि जनता अपने प्रतीकात्मक अर्थ के साथ पहचान कर सकती है, और इससे उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा होगी।

**Q4. जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया का संक्षेप में पता लगाएँ |**

**उत्तर-** जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया 1848 में उदारवादी, मध्यवर्गीय जर्मनों की हार के बाद प्रशिया द्वारा जारी रखी गई थी। 1848 में इसके मुख्यमंत्री ओटो वॉन बिस्मार्क ने प्रशिया की सेना की मदद से इस प्रक्रिया को अंजाम दिया। सात वर्षों में, प्रशिया ने ऑस्ट्रिया, डेनमार्क और फ्रांस के साथ तीन युद्ध लड़े। इन युद्धों का समापन प्रशिया की जीत और जर्मन एकीकरण में हुआ। प्रशिया के राजा विलियम । को जनवरी 1871 में वर्साय में जर्मन सम्राट घोषित किया गया था।

**Q5. अपने शासन वाले क्षेत्रों में शासन व्यवस्था को ज्यादा कुशल बनाने के लिए नेपोलियन ने क्या बदलाव किए ?**

**उत्तर-** नेपोलियन ने प्रशासनिक व्यवस्था को उसके द्वारा शासित क्षेत्रों में अधिक कुशल बनाने के लिए कई बदलाव किए। उन्होंने 1804 का सिविल कोड तैयार किया, जिसे नेपोलियन कोड के नाम से भी जाना जाता है। यह जन्म के आधार पर विशेषाधिकार के साथ दूर किया। इस कानून ने कानून के समक्ष समानता स्थापित की, और संपत्ति का अधिकार भी हासिल किया। नेपोलियन ने प्रशासनिक विभाजनों को छोटा कर दिया, सामंती व्यवस्था को समाप्त कर दिया और किसानों को मनुवादी बकाया राशि और अधिपत्य से मुक्त किया। परिवहन और संचार में भी सुधार किया गया।

## चर्चा करें

### Q1. उदारवादियों की 1848 की क्रांति का क्या अर्थ लगाया जाता है उदारवादियों ने किन राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को बढ़ावा दिया?

**उत्तर-** उदारवादियों की 1848 की क्रांति यूरोप में गरीबों, बेरोजगारों और भूखे किसानों और श्रमिकों के विद्रोह के साथ-साथ शिक्षित मध्यम वर्गों द्वारा उठाए गए विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलनों को संदर्भित करती है। जबकि फ्रांस जैसे देशों में, 1848 के दौरान भोजन की कमी और व्यापक बेरोज़गारी ने लोकप्रिय विद्रोह का नेतृत्व किया, यूरोप के अन्य हिस्सों जैसे जर्मनी, इटली में उदारवादी मध्यम वर्ग के पुरुषों और महिलाओं ने एक साथ मिलकर काम किया। संसदीय सिद्धांतों के आधार पर राष्ट्र-राज्यों के निर्माण के लिए उनकी मांगों को आवाज़ दें। उदाहरण के लिए, जर्मनी में, मध्य-वर्ग के पेशेवरों, व्यापारियों और समृद्ध कारीगरों से युक्त विभिन्न राजनीतिक संघों ने फ्रैंकफर्ट में एक सर्व-जर्मन नेशनल असेंबली बनाई। इस फ्रैंकफर्ट संसद ने जर्मन राष्ट्र के लिए एक संविधान का मसौदा तैयार किया, जिसका नेतृत्व संसद के अधीन राजशाही के अधीन किया जाता था। हालांकि इस तरह के उदारवादी आंदोलनों को अंततः रूढ़िवादी ताकतों द्वारा दबा दिया गया था, फिर भी पुराने आदेश को बहाल नहीं किया जा सका। सम्राटों ने महसूस किया कि क्रांति और दमन के चक्र केवल उदारवादी-राष्ट्रीय क्रांतिकारी क्रांतिकारियों को रियायतें देकर समाप्त किए जा सकते हैं। उदारवादियों द्वारा समर्थित राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विचार स्पष्ट रूप से लोकतांत्रिक आदर्शों पर आधारित थे। राजनीतिक रूप से, उन्होंने राष्ट्रीय एकता के साथ संवैधानिकता की मांग की - एक लिखित संविधान और संसदीय प्रशासन के साथ एक राष्ट्र-राज्य। वे समाज को उसके वर्ग-आधारित विभाजन और जन्म के अधिकारों से मुक्त करना चाहते थे। गंभीरता और बंधुआ श्रम को समाप्त करना पड़ा, और आर्थिक समानता को एक राष्ट्रीय लक्ष्य के रूप में आगे बढ़ाना पड़ा। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता पर आधारित राष्ट्र की उदारवादी अवधारणा में संपत्ति का अधिकार भी महत्वपूर्ण था।

### Q2. यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति के योगदान को दर्शाने के लिए तीन उदाहरण दें

**उत्तर-** युद्धों और क्षेत्रीय विस्तार के अलावा, संस्कृति ने भी राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वच्छंदतावाद एक यूरोपीय सांस्कृतिक आंदोलन था जिसका उद्देश्य साझा विरासत और सामान्य इतिहास की भावना पैदा करके राष्ट्रीय एकता को विकसित करना था। रोमांटिक कलाकारों की भावनाओं, अंतर्ज्ञान और रहस्यमय भावनाओं पर जोर ने राष्ट्रवादी भावनाओं को आकार और अभिव्यक्ति दी। राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में कला की ताकत यूरोपीय कवियों और कलाकारों द्वारा निभाई गई भूमिका में अच्छी तरह से समझ में आती है, ताकि उनकी राष्ट्रीय पहचान स्थापित करने के संघर्ष में यूनानियों का समर्थन करने के लिए जनता की राय जुटाई जा सके। लोक गीत, नृत्य और कविता ने यूरोप में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया। राष्ट्रीय चेतना के निर्माण के लिए लोक संस्कृति के विभिन्न रूपों को एकत्र करना और रिकॉर्ड करना महत्वपूर्ण था। आम लोगों के जीवन का एक हिस्सा होने के नाते, लोक संस्कृति ने राष्ट्रवादियों को राष्ट्रवाद के संदेश को बड़े और विविध दर्शकों तक ले जाने में सक्षम बनाया। पोलिश संगीतकार करोल कुरपिंस्की ने अपने ओपेरा और संगीत के माध्यम से पोलिश राष्ट्रवादी संघर्ष को मनाया और लोकप्रिय किया, जिसमें लोक नृत्यों जैसे पोलो और माजुरका को राष्ट्रवादी प्रतीकों में बदल दिया गया। भाषा ने यूरोप में राष्ट्रवादी भावनाओं को विकसित करने में एक विशिष्ट भूमिका निभाई। इसका एक उदाहरण यह है कि रूसी कब्जे के दौरान पोलिश का उपयोग रूसी प्रभुत्व के खिलाफ संघर्ष

के प्रतीक के रूप में देखा गया था। इस अवधि के दौरान, पोलिश भाषा को स्कूलों से बाहर कर दिया गया था और रूसी भाषा को हर जगह लगाया गया था। 1831 में रूसी शासन के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह की हार के बाद, पोलैंड में पादरी के कई सदस्यों ने राष्ट्रीय प्रतिरोध के हथियार के रूप में भाषा का उपयोग करना शुरू कर दिया। उन्होंने रूसी प्रचार में मना करने और चर्च की सभाओं और धार्मिक शिक्षा के लिए पोलिश का उपयोग करके ऐसा किया। लोकभाषा, जनसाधारण की भाषा के उपयोग पर जोर ने राष्ट्रीय एकता के संदेश को फैलाने में मदद की।

**Q3. किन्हीं दो देशों पर ध्यान केंद्रित करते हुए बताएं कि 19वीं सदी में राष्ट्र किस प्रकार विकसित हुआ।**

**उत्तर-** 19वीं शताब्दी मैं यूरोप के अनेक देशों में राष्ट्रीयता की भावनाएं पनपने लगी और देखते ही देखते वहां अनेक राष्ट्रों का निर्माण हुआ। ऐसे दो देश जहां राष्ट्रीयता का विकास हुआ है इंग्लैंड और पोलैंड: इंग्लैंड: इंग्लैंड में एक जातीय समूह अंग्रेजों ने ब्रितानी राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अन्य समूहों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। जिसके लिए उन्होंने अपनी आंग्ल संस्कृति, प्रतीक चिन्हों, राष्ट्रीय गान आदि का बहुत प्रचार प्रसार किया।

पोलैंड: वियना की कांग्रेस द्वारा पोलैंड का बहुत बड़ा भाग रूस को दिए जाने पर पोलैंड के लोगों के दिलों में अपने देश के प्रति राष्ट्रीयता की भावना जगने लगी। जिसके कारण 1848 ईसवी पोलैंड में वारसा के स्थान पर इस के खिलाफ क्रांति आरंभ हुई। विद्रोहियों को यह आशा थी कि उन्हें पश्चिमी यूरोपीय देशों की की सहायता प्राप्त होगी। परंतु रूस से दुश्मनी लेने को कोई तैयार ना था। जिसके कारण रूसी सेना ने विद्रोहियों को बड़ी सरलता से दबा दिया।

**Q4. ब्रिटेन में राष्ट्रवाद का इतिहास शेष यूरोप की तुलना में किस प्रकार भिन्न है**

**उत्तर-** ब्रिटेन में राष्ट्रवाद का इतिहास यूरोप के बाकी हिस्सों में इस मायने में विपरीत था कि इसे जनता पर मजबूर किया गया था। अठारहवीं शताब्दी से पहले ब्रिटिश राष्ट्र की कोई अवधारणा नहीं थी। यह क्षेत्र वास्तव में विभिन्न जातीय समूहों (अंग्रेजी, वेल्श, स्कॉट, आयरिश) द्वारा बसा हुआ था। प्रत्येक समूह की अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक परंपरा थी। हालाँकि, जैसे-जैसे अंग्रेजी राज्य धन, महत्व और शक्ति के मामले में बढ़ता गया, यह द्वीपों के अन्य राज्यों पर अपने प्रभाव को बढ़ाने में सक्षम था। अंग्रेजी संसद, जिसने राजशाही से सत्ता छीन ली थी, ने जातीय भेदों को दूर करने और विभिन्न समूहों को ब्रिटिश राष्ट्र-राज्य में एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसके केंद्र में इंग्लैंड था। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नैतिकतावादी राष्ट्रीयताएं यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन बनाने के लिए अंग्रेजी राज्य में शामिल होने के लिए मजबूर थीं। नए ब्रिटेन के प्रतीक-ब्रिटिश ध्वज, राष्ट्रगान और अंग्रेजी भाषा को व्यापक रूप से लोकप्रिय बनाया गया, जबकि अन्य शामिल होने वाले राज्यों की विशिष्ट पहचान को व्यवस्थित रूप से दबा दिया गया। अंग्रेजी संस्कृति ब्रिटिश राष्ट्र पर हावी थी, जबकि अन्य राज्य संघ में मात्र सहायक बन गए। इस प्रकार, ब्रिटेन में राष्ट्रवाद लोगों के एकजुट होने या देशव्यापी आंदोलनों की इच्छा के परिणामस्वरूप नहीं आया, लेकिन सत्ता में लोगों के फ़ैसलों से।

**Q5. बाल्कन प्रदेशों में राष्ट्रवादी तनाव क्यों पनपा?**

**उत्तर-** रोमांटिक राष्ट्रवाद के विचारों के प्रसार के कारण बाल्कन में राष्ट्रवादी तनाव उभरा और साथ ही इस क्षेत्र पर पहले शासन करने वाले ओटोमन साम्राज्य के विघटन के कारण। बाल्कन में विभिन्न स्लाव समुदायों ने स्वतंत्र शासन के लिए प्रयास करना शुरू किया। वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करते थे और हर राज्य अधिक क्षेत्र चाहता था, यहां तक कि दूसरों की कीमत पर भी। इसके अलावा, बाल्कन पर साम्राज्यवादी सत्ता की पकड़ ने स्थिति को बदतर बना दिया। रूस, जर्मनी, इंग्लैंड, ऑस्ट्रो-हंगरी सभी इस क्षेत्र पर अधिक नियंत्रण चाहते थे। इन संघर्षों के कारण अंततः 1914 में प्रथम विश्व युद्ध हुआ।